موضوع الخطبة : سلسلة خطب مختصرة عن نواقص الإسلام – الناقض الأول (الشرك بالله)

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:इस्लाम भंजक

प्रथम भंजक: (अल्लाह के साथ शिर्क करना)

سلسلة خطب مختصرة عن نواقص الإسلام – الناقض الأول (الشرك بالله)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

समस्त प्रार्थनाओं को केवल अल्लाह ही के लिए करने पर समस्त शरीअ़तों की सहमति है

अल्लाह के बदो!अल्लाह तअ़ाला से डरो और उसका आदर करो,उस की आज्ञा मानो,और उस के अवज्ञा से बचो,और जान लो कि जिन मामलों में समस्त आकाशीय पुस्तकों की सहमति है उन में यह भी है कि:समस्त प्रकार की प्रार्थनाएं केवल अल्लाह ही के लिए करना अनिवार्य है,अल्लाह तअ़ाला का फरमान है:

وما أرسلنا من قبلك مِن رسول إلا نوحي إليه أنه **لا إله إلا أنا** فاعبدون

अर्थात:और नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु अउ की ओर यही वह्यी (प्रकाशना) करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है,अत: मेरी ही इबादत करो।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया: ﴿فاعبد الله **مخلصا** له الدين﴾

अर्थात:अत: इबादत (वंदना) करो अल्लाह की शुद्ध करते हुए उस के लिये धर्म को।

शैख अ़ब्दुर रह़मान अलसादी रह़िमहुल्लाह[1] इस आयत की व्याख्या में लिखते हैं:अर्थात: अपने धर्म को पूरे रूप से अल्लाह के लिए शुद्ध रखो,चाहे बाह्य अह़काम हों अथवा आंतरिक अह़काम,इस्लाम,ईमान और एह़सान (प्रत्येक श्रेणी को अल्लाह ही के लिए शुद्ध रखो),वह इस प्रकार से कि अल्लाह के लिए समस्त प्रार्थनाओं को शुद्ध रखो,उन के द्वारा अल्लाह की प्रसन्नता मांगो,इस के अतिरिक्त कोई और उद्देश्य न रखो।

अल्लाह का कथन: (आप अल्लाह ही की प्रार्थना करें,उसी के लिए धर्म को शुद्ध करते हुए) यह एखलास (सत्यता) का आदेश और इस बात की स्पष्टता है कि जिस प्रकार से अल्लाह तआ़ला के लिए प्रत्येक प्रकार का कमाल है और प्रत्येक प्रकार से वह अपने बंदों पर कृपालु एवं उपकार करने वाला है,इसी प्रकार से उस के लिए शुद्ध धर्म है जो प्रत्येक प्रकार के मलिनता एवं मिलावट से पवित्र है,यही वह धर्म है जिसे उस ने अपने लिए पसंद फरमाया,इस धर्म को अपने चिन्हित बंदों के लिए पसंद फरमाया,उन को इस धर्म का आदोश दिया,क्योंकि यह धर्म इस बात पर आधारित है कि अल्लाह की प्रार्थना की जाए,उस के प्रेम,भय,आशा एवं

---

[1] आप अ़ल्लामा फक़ीह मोफस्सिर शैख अ़ब्दुर रह़मान बिन नासिर अलसादी हैं,आप ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं,इस्लामी शिक्षाओं में आप को गहरी बसीरत (अंतर्दृष्टि) प्राप्त थी,आप का निधन १३७६ हिजरी में हुआ,आप की जीवनी आप के क्षात्र शैख अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर रह़मान अलबसाम के कलम से पढ़ने के लिए देखें:,आप की जीवनी अन्य पुस्तकों में भी उल्लेख की गई है।

विनम्रता व निकटता जैसी प्रार्थनाओं के द्वारा,बंदों को अपने उद्दश्यों की प्राप्ति के लिए उसी से मांगना चाहिए,यही वह प्रार्थना है जो दिलों के सुधार,शुद्धता एवं पवित्रता का कारण है,और किसी भी प्रार्थना में उस के साथ शिर्क (मिश्रणवाद) नहीं करने देती,क्योंकि अल्लाह तआ़ला शिर्क से मुक्त है,अल्लाह तआ़ला समस्त साझीदारों से तथा शिर्क (मिश्रणवाद) से विरक्त है, शिर्क (मिश्रणवाद)दिल और आत्मा में बिगाड़ पैदा करता है,दुनिया एवं आखिरत को नष्ट कर देता है और मनुष्य को अति दुर्दशा व दुराचार का शिकार बना देता है।समाप्त

जिन चीज़ों में समस्त शरीअ़तों की सहमति है उन में शिर्क भी है

- **अल्लाह के बंदो!जिन मामलों में समस्त शरीअ़तें सहमत हैं उन में यह भी है:अल्लाह के प्रार्थना में शिर्क (मिश्रणवाद) करने का निवारण,अल्लाह तआ़ला का कथन है:**

ولقد أوحي إليك **وإلى الذين من قبلك** لئن أشركت ليحبطن عملك ولتكونن من الخاسرين * بل **الله فاعبد** وكن من الشاكرين

अर्थात:तथा वह्यी की गई है आप की आरे तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म,तथा आप हो जायेंगे क्षति ग्रस्तों में से।बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।

भाषा में शिर्क (मिश्रणवाद): شَـرَّك الشـيء المفـرد بغـيره **से निकला है(अर्थात एक चीज़ को दूसरी चीज़ से मिलाना)। (यह उस समय कहा जात है) जब उस चीज़ को दो अथवा दो से अधिक लोगों में समान कर दिया जाए,ऐसे में आप कहते हैं:**[2]قـد اشـترك الـرجلان وتشـاركا **(अर्थात दो लोग एक साथ शरीक हुए)।इस आधार पर जब यह कहा जाए कि:** (فـلان أشـرك بـالله) **(अमुक ने अल्लाह के साथ शिर्क (मिश्रणवाद) किया) तो उसका अर्थ होगा:उस ने अल्लाह के साथ उन के कुछ विाशेषताओं एवं गुणों में साझा बनाया जिन में किसी को उस का साझा बनाना सही नहीं।चाहे उन गुणों का संबंध अल्लाह तआ़ाला के नामों से हो अथवा गुणों से हो अथवा उस के कार्यों से,अथवा इस बात से हो कि अल्लाह तआ़ाला ही समस्त प्रार्थनाओं का एकमात्र प्रात्र है,इस के अतिरिक्त कोई और नहीं,चाहे जिस को साझी बनाया जाए वह मनुष्य हो अथवा खनिज व धातु में से हो अथवा क़ब्र हो अथवा कोई और चीज़।**

सारे लोग एकेश्वरवाद पर स्थिर थे,फिर क़ौमे नूह में सदाचार लोगों के सम्मान के कारण शिक्र आरंभ हो गया

अत: अल्लाह ने नूह को रसूल बना कर भेजा

---

[2] **देखें:** «لسان العرب»، مادة: شَ-رَ-ك

अल्लाह के बंदो!आदम अलैहिस्सलाम के युग से ले कर दस शताब्दियों तक लोग एकेश्वरवाद पर स्थिर रहे,फिर शिर्क (मिश्रणवाद) हुआ,अल्लाह ने नूह को रसूल बना कर भेजा ताकि लोगों को एकेश्वरवाद की ओर बोलायें,अल्लाह का कथन है:

كان الناس أمة واحدة فبعث الله النبيين مبشرين ومنذرين

अर्थात: (आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सत्धर्म पर थे,(फिर विभेद हुआ) तो अल्लाह ने नबियों को शुभ समाचार सुनाने,और (अवैज्ञा) से सचेत करने के लिये भेजा।

इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अंहुमा फरमाते हैं:नूह और आदम के बीच दस शताब्दियों का अंतर था,उस बीच सारे लोग सत्य शरीअ़त पर थे,फिर उन के बीच मतभेद हो गया,तो अल्लाह ने पैगंबरों को शुभसूचना देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा।[3]

अल्लाह का कथन है: وما كان الناس إلا أمة واحدة فاختلفوا

अर्थात:लोग एक ही धर्म (इस्लाम) पर थे,फिर उन्हों ने विभेद किया।

अर्थात: जिस दिन सत्य पर स्थिर थे उस से फिर गए और (मिश्रणवाद) करने लगे।

---

[3] **इब्ने जरीर ने यह कथन सूरह** البقرة **की आयत:२१३ की व्याख्या में रिवायत किया है।**

मोमिनों के समूह!शिक्र घटित होने के पश्चात एकेश्वरवार की दावत देने के लिए अल्लाह ने सर्वप्रथम जिस रसूल को भेजा वह नूह अलैहिस्सलाम हैं,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

إنا أوحينا إليك كما أوحينا إلى **نوح** والنبيين من بعده.

अर्थात: (हे बनी!) हम ने आप की ओर वैसे ही वह्यी भेजा है,जैसे नूह और उस के पश्चात के नबियों के पास भेजा।

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:समस्त लोग आदम की मिल्लत (धर्म) पर थे,यहां तक कि वह वे मूर्ति पूजा करने लगे,उस के पश्चात अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम को भेजा,वह सर्वप्रथम रसूल थे जिन को अल्लाह ने धरती पर रहने वालों की ओर भेजा।[4]

नूह अलैहिस्सलाम के युग में शिर्क (मिश्रणवाद) का कारण सदाचार लोगों का सम्मान था,जैसा कि सहि बोखारी में इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अंहुमा से इस आयत की व्याख्या में आया है: फरमाया:यह पांचों नूह अलैहिस्सलाम के समुदाय के सदाचार लोगों के नाम थे जब उन की मृत्यु हो गई तो शैतान ने उन के दिल में डाला कि अपने सभाओं में जहां वे बैठे थे उन के बुत स्थापित कर लें और उन बुतों के नाम अपने सदाचारी लोगों के नाम पर रख लें अत: उन लोगों ने ऐसा ही किया।उस समय उन

---

[4] **तफसीर इब्ने कसीर:**البقرة **२१३,थोड़े हेरे फेर के साथ।**

बुतों की पूजा नहीं होती थी किन्तु जब वे लोग भी मर गए जिन्होंने मूर्ति स्थापित किए थे और लोगों में ज्ञान न रहा तो उन की पूजा होने लगी।[5]

शिर्क एकेश्वरवाद के तीन प्रकारों में होता है

अल्लाह के बंदो! शिर्क (मिश्रणवाद) की अवैधता इस्लाम धर्म के स्पष्ट मामलों में से है,यह इस्लाम भंजको में से है,जो व्यक्ति शिर्क (मिश्रणवाद) करता है वह इस्लाम से बाहर हो जाता है,यद्यपि शिर्क (मिश्रणवाद) करने वाला नमाज़ व रोज़ा का पालन ही क्यों न करता हो और अपने आप को मुसलमान ही क्यों न मानता हो,यह समस्त इस्लाम भंजकों में सर्वाधिक होने वाला भंजक है,अल्लाह की पुस्तक में शिर्क (मिश्रणवाद) की निकृष्टता और मुशरिकों की यातना अनगिनत स्थानों बयान किया गया है,अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखें।

ऐ मोमिनों के समूह!तौ़हीद-ए-रुबूबियत (अल्लाह का रब होना) तै़हीद-ए-उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना) और तौ़हीद-ए-अस्मा व सिफात (अल्लाह का अपने नामों एवं गुणों में शुद्ध होना) (तीनों प्रकार) में शिर्क (मिश्रणवाद) होता है।

तौ़हीद-ए-रुबूबियत (अल्लाह का रब होना) में शिर्क (मिश्रणवाद) का उदाहरण यह है कि:यह आस्था रखा जाए कि अल्लाह के साथ कोई और भी मोदब्बिर(निर्वाहक),अथवा राजिक (जीविका दाता),अथवा

---

[5] सह़ी बोखारी: (४९२०)

रचनाकार,अथवा जीवन एवं मृत्यु प्रदान करने वाला है,जो व्यक्ति इस प्रकार का आस्था रखे तो वह मुशरिक है,यह अनिवार्य है कि अल्लाह तआ़ला को उपरोक्त समस्त कार्यों में ऐकता माना जाए,और बंदा के लिए जाएज़ नहीं कि उन में से किसी कार्य को अल्लाह के अतिरिक्त की ओर जोड़े।

अल्लाह के नामों में शिक्र का उदाहरण:मोसैलमा कज़्जाब का स्वयं को "رحمن الیمامۃ" [6]के नाम से पुकारना,यह वह व्यक्ति है जो नबी के युग में अस्तित्व में आया और पैगंबरी का दावा कर बैठा और स्वयं को "الرحمن" से पुकारने लगा,जो कि अल्लाह तआ़ला के उन नामों में से है जो केवल उन के साथ विशेष हैं।

अल्लाह के गुणों एवं विशेषणों में शिर्क (मिश्रणवाद) करने का उदाहरण यह है कि: अल्लाह के अतिरिक्त के लिए गैब के ज्ञान का दावा किया जाए वह इस प्रकार से कि उस को अल्लाह का साझी माना जाए,उदाहरण स्वरूप वह व्यक्ति जो यह आस्था रखे कि जादूगर और काहिन (पुरोहित) आदि गैब का ज्ञान रखते हैं,अथवा नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को गैब का ज्ञानी माने,जो व्यक्ति अल्लाह के अितरिक्त के लिए गैब के ज्ञान का दावा करे वह शिर्क है।यह अनिवार्य है कि गैब के ज्ञान में अल्लाह को

---

[6] الیمامۃ अरब उप महाद्वीप के बीच में एक स्थान का नाम है।

अकेला माना जाए जैसा कि अल्लाह ने अपनी हस्ती को उस से चित्रित किया है: قل لا يعلم من السماوات والأرض **الغيب إلا الله**.

अर्थात:आप कह दें कि नहीं जानता है जो आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को अल्लाह के सिवा।

तौ़हीद-ए-उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना)-जो कि बंदों के कार्य है-इस में शिर्क (मिश्रणवाद) करने का मतलब यह है कि किसी भी प्रार्थना में अल्लाह के साथ अल्लाह के अतिरिक्त को साझी माना जाए,यह प्रार्थना जैसा भी हो,दुआ़,सजदा,ज़ब्ह़,नज़र (शपथ) व नियाज (याचना),इच्छा एवं विस्मय और आशा आदि। जिस ने इन प्रार्थनाओं का कोई भाग अल्लाह के अतिरिक्त के लिए किया उस ने स्र्वश्रेष्ठ अल्लाह के साथ शिर्क (मिश्रणवाद) किया।अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया:

(ولقد أوحي إليك وإلى الذين من قبلك لئن أشركت ليحبطن عملك ولتكونن من الخاسرين * بل الله فاعبد وكن من الشاكرين)

अर्थात: तथा वह्यी की गई है आप की आरे तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म,तथा आप हो जायेंगे क्षति ग्रस्तों में से।बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।

अल्लाह तआ़ला ने यह आदेश दिया है कि एखलास (निष्कपटता) के साथ अल्लाह से दुआ़ की जाए,अल्लाह का कथन है:

(فادعوا الله مخلصين له الدين)

अर्थात: अत: इबादत (वंदना) करो अल्लाह की शुद्ध करते हुए उस के लिये धर्म को।

और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (दुआ़ ही प्रार्थना है)।[7]

अल्लाह ने क़ुरान में तीन सौ स्थानों पर एखलास (निष्कपटता) के साथ अल्लाह से दुआ़ करने का आदेश दिया है,ज़ब्ह़ के विषय में अल्लाह ने आदेश दिया कि बंदा निकटता की नीयत से केवल अल्लाह के लिए जानवर ज़ब्ह़ करे,अपने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से अल्लाह ने फरमाया:

(فصل لربك وانحر)

अर्थात:तो तुम अपने पालनहार के लिये नमाज़ पढ़ो तथा बलि दो।

तथा आप से अल्लाह ने फरमाया:

(قل إن صلاتي ونسكي ومحياي ومماتي لله رب العالمين * لا شريك له وبذلك أمرت وأنا أول المسلمين)

---

[7] **इस ह़दीस को अबूदाऊद (१४७९) और तिरमिज़ी (२९६९) आदि ने नोमान बिन बशीर रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है और शैख अल्बानी ने इसे सह़ी कहा है।**

अर्थात:आप कह दें कि निश्चय मेरी नमाज़ और मरी क़ुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिये है।

इस आयत में نسک का आशय ज़ब्ह़ है।

आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (उस व्यक्ति पर अल्लाह की अभिशाप है जो अल्लाह के अतिरिक्त के नाम पर जानवर ज़ब्ह़ करता है)।[8]

निष्कर्ष यह कि जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त के लिए किसी भी प्रकार की प्रार्थना करे उस ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया,चाहे वह पूज्य क़ब्र हो,अथवा नबी हो,अथवा जादूगर हो,अथवा जिन्न हो अथवा कोई और,चाहे उस पूज्य के लिए प्रार्थना करने का कारण यह हो कि उस अल्लाह के निकट करने वाला माध्यम मानता हो,अथवा अनुशंसा मानता हो अथवा वसीला (माध्यम) अथवा कुछ और,यह सब शिर्क (मिश्रणवाद) है,और ये सब मुशरिकों के निराधार साक्ष्य हैं,अल्लाह तआ़ला ने मुशरिकों के विषय में फरमाया:

والذين اتخذوا من دونه أولياء ما نعبدهم إلا **ليقربونا** إلى الله زلفى

अर्थात:तथा जिन्होंने बना रखा है अल्लाह के सिवा संरक्षक वे कहते हैं कि हम तो उन की वंदना इस लिए करते हैं कि वह समीप कर देंगे हमें अल्लाह से।

---

[8] **सह़ी मुस्लिम (१९७८) वर्णन:अ़ली रज़ीअल्लाहु अंहु**

तथा फरमाया: ويعبدون من دون الله ما لا يضرهم ولا ينفعهم ويقولون هؤلاء **شفعاؤنا** عند الله

अर्थात:और वह अल्लाह के सिवा उस की इबातद (वंदना) करते हैं जो न तो उन्हें कोई हानि पहुँचा सकते हैं और न लाभ,और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे अभिस्तावक (सिफारशी) हैं।

तथा अधिक फरमाया:

أم اتخذوا من دون الله **شفعاء** قل أولو كانوا لا يملكون شيئا ولا يعقلون.

अर्थात:क्या उन्होंने बना लिये हैं अल्लाह के अतिरिक्त बहुत से अभिस्तावक (सिफारशी)?आप कह दें:क्या (यह सिफारिश करेंगे)यदि वह अधिकार न रखते हों किसी चीज़ का और न ही समक्ष रखते हों?

ज्ञात हुआ कि वासता (माध्यम) और अनुशंसा को प्रमाण बना कर अल्लाह के अतिरिक्त की प्रार्थना करना क़ुरान की प्रमाणों के आलोक में व्यर्थ एवं निराधार है,जिन्हों ने ऐसा किया उन्हों ने अपने कार्य को अन्य के नाम से संबंधित किया,रचनाकार को मखलूक पर परिकल्पना किया, उन्होंने नहीं देखा कि दुनिया के राजाओं एवं सरदारों तक पहुंचने के लिए वासते (मध्यम),समीपवर्तियों एवं अनुशंसाओं की आवश्यकता होती है,इस लिए कहा कि अल्लाह का मामला भी ऐसा ही है,उस तक पहुंचने के लिए वासतों (माध्यमों), समीपवर्तियों एवं अनुशंसाओं की आवश्यकता है,जैसे

पैगंबर,सदाचारी लोगों की कब्रें और देवदूत आदि,यह अल्लाह के साथ स्पष्ट शिर्क है।

ज्ञात हुआ कि शिक्र तौह़ीद (एकेश्वरवाद) के तीनों प्रकारों में हो सकता है, तौह़ीद-ए-रुबूबियत (अल्लाह का रब होना) तैह़ीद-ए-उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना) और तौह़ीद-ए-अस्मा व सिफात (अल्लाह का अपने नामों एवं गुणों में शुद्ध होना)किन्तु अधिकतर तैह़ीद-ए-ईबादत/उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना) में शिर्क होता है।

अल्लाह के बंदो!एखलास (निष्कपटता) एवं शिर्क के अर्थ को समझने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है,जो व्यक्ति इसे समझ ले उस के लिए लोगों की रचना के मूल उद्देश्य को समझना आसान हो जाएगा।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि शिर्क (मिश्रणवाद) की निकृष्टता छे स्वरूपों से स्पष्ट होती है:

प्रर्थम स्वरूप:वह सबसे बड़ा पापी है जिस के द्वारा अल्लाह का अवज्ञा किया जाता है,क्योंकि इस से अल्लाह के अधिकारों का अवहेलना होता है,जैसे प्रार्थना,विनम्रता,विनम्रता एवं विनयशीलता,और अल्लाह तआ़ला के सम्मान में कमी करना उस के प्रति आशंका करने का प्रमाण है,जो कि बसबे बड़ा पाप है,अल्लाह का फरमान है:

ومن يشرك بالله فقد افترى إثما **عظيما**

अर्थात:और जो अल्लाह का साझी बनाता है तो उस ने महापाप गढ़ लिया।

अधिक फरमाया: إن الشرك لظلم **عظيم**.

अर्थात:वास्तव में शिर्क (मिश्रणवाद) बड़ा घोर अत्याचार है।

इब्ने मस्ऊद से वर्णित है कि:मैं ने कहा:हे अल्लाह के रसूल!सबसे बड़ा पाप क्या है?आप ने फरमाया:तुम अल्लाह के साथ साझी बनाओ जब कि उसी ने तुम को पैदा किया।[9]

द्वतीय स्वरूप:शिर्क (मिश्रणवाद) समस्त अ़मलों को नष्ट कर देता है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है: ولو أشركوا **لحبط** عنهم ما كانوا يعملون

[9] **सह़ी बोखारी (६८११) और सह़ी मुस्लिम (८६)**

अर्थात:और यदि वह शिर्क (मिश्रणवाद) करते,तो उन का सब किया धरा व्यर्थ हो जाता।

और अल्लाह ने अपने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया:

ولقد أوحي إليك وإلى الذين من قبلك لئن أشركت **ليحبطن** عملك ولتكونن من الخاسرين * بل الله فاعبد وكن من الشاكرين.

अर्थात: तथा वह्यी की गई है आप की आरे तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म,तथा आप हो जायेंगे क्षति ग्रस्तों में से।बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।

तृतीय स्वरूप:जो व्यक्ति शिर्क की अवस्था में मरता है,अल्लाह उस को क्षमा नहीं करता,और शिर्क करने वाला स्वेद नरक में रहेगा,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

إن الله **لا يغفر أن يشرك به** ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء ومن يشرك بالله فقد ضل ضلالا بعيدا

अर्थात:नि:संदेह अल्लाह इसे क्षमा नहीं करेगा कि उस का साझी बनाया जाये,और इस के सिवा जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा।तथा जो अल्लाह का साझी बनाता है वह कुपथ में बहुत दूर चला गया।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया:

إنه من يشرك بالله فقد **حرم الله عليه الجنة ومأواه النار** وما للظالمين من أنصار.

अर्थात:वास्तव में जिस ने अल्लाह का साझी बना लिया उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को हराम (वर्जित) कर दिया,और उस का निवास स्थान नरक है,तथा अत्याचारियों का काई सहायक न होगा।

चौथा स्वरूप:अल्लाह तआ़ला ने क़ुरान पाक में शिर्क (मिश्रणवाद) की कड़ी निन्दा बयान की है,उस से रोका है,मुशरिकों की निकृष्टता का उल्लेख किया है,और आखिरत में उन का बुरा ठिकाना बताया है।क़ुरान में शिर्क और उस के यौगिकों का उल्लेख सौ (१००) से अधिक बार आया है,नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपनी अनेक ह़दीसों में शिक्र से सचेत किया है।[10]

पांचवा स्वरूप:पैगंबर और उन के अनुयायी शिर्क (मिश्रणवाद) से डरे हुए थे और इस में पड़ने से डरते थे,इस का उदाहरण इबराहीम अलैहिस्सलाम की यह दुआ़ है: واجنبني وبني أن نعبد **الأصنام**

अर्थात:और मुझे तथा मेरे पुत्रों को मूर्ति पूजा से बचा ले।

छटा स्वरूप:इस्लामी विद्वानों की एक बात पर सर्वसम्मति है कि अल्लाह के प्रार्थना में शिक्र करना ऐसा अ़मल है जो मनुष्य को इस्लाम से बाहर कर देता है।इब्ने तैमिया रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं:जो व्यक्ति फरिशतों और पैगंबरों का माध्यम बना कर उन्हें पुकारे,उन पर तवक्कुल (विश्वास) करे और उन से लाभ की प्राप्ति एवं हानि की दूरी की दुआ़ करे,उदाहरण

---

[10] **देखें:** "المعجم المفهرس لألفاظ القرآن الكريم" مادة: شَرَك

स्वरूप उन से क्षमा,दिलों की बात,कठिनाई को दूर करने एवं आवश्यकता को पूरी करने की दुआ़ करे तो वह सर्वसम्मति से काफिर है।[11]

उपदेश की समाप्ति:

अल्लाह के बंदो!तौ़हीद (एकेश्वरवाद) एवं इस के विपरीत (शिर्क) को समझने और शिर्क (मिश्रणवाद) और उसे में पड़ने से सचेत करने के लिए यह प्राक्कथन लाभदायक है,अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को जीवन भर तौ़हीद (एकेश्वरवाद) पर स्थिर रहने की तौफीक़ प्रदान करे,क्यों कि जो व्यक्ति शरीअ़त पर स्थिर रहा और तौ़हीद (एकेश्वरवाद) की स्थिति में मरा तो वह बिना हिसाब के स्वर्ग में प्रवेश करेगा।

तथा आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

---

[11] **देखें:** "مجموع فتاوى ابن تيمية" **(١/١٢٤)**

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे हमारे रब!हमे दुनिया में नेकी दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रह़मान ह़िफज़ुर रह़मान तैमी